राजनीति में औरतों की सक्रिय भागीदारी हो

वीणा शिवपुरी

हाल में कुछ प्रदेशों में हुए चुनावों के दौरान कई बातें सामने आईं। हर राजनीतिक पार्टी ने अपने भाषणों और घोषणापत्रों में औरतों का ज़िक्र किया। उनकी ताक़तमंदी के कार्यक्रम चलाने से लेकर उनके लिए हर जगह सीटें आरक्षित करने की बात की। अब तक जिन्हें कोई अहमियत नहीं दी जाती थी। जिनका वोट पाने के लिए उनके मर्दों से बात करना काफ़ी समझा जाता था। अब सीधे उन्हें संबोधित किया गया। यहां अहम बात राजनीतिक पार्टियों की ईमानदारी नहीं, बल्कि वह मजबूरी है जिसके तहत उन्हें औरतों को महत्व देने की बात करनी पड़ रही है। यह अपने आप में मील का पत्थर है।

इन चुनावों से एक और बात सामने आई। पिछले वर्षों में महिला वोटरों की गिनती बहुत बढ़ी है। इसके पीछे गैर-सरकारी संस्थाओं की मेहनत, औरतों में बढ़ती जागरूकता आदि हैं। अब औरतें बहुत बड़ी संख्या में वोट देने आती हैं। अब उनके वोट उनके परिवार के मर्दों के कब्जे में नहीं हैं। खुशी की बात यह भी है कि औरतें वोट बेचने को तैयार भी नहीं हैं। इस तरह का वोटर किसी भी राजनीतिक दल के लिए चुनौती होता है। उसे नज़र-अंदाज नहीं किया जा सकता।

भविष्य की तस्वीर

अब साफ समझ में आ रहा है कि आने वाले समय में सभी राजनीतिक दल महिला वोटरों को लुभाने की पूरी कोशिश करेंगे। इस प्रकार औरतों तथा उनके साथ काम करने वाली संस्थाओं की ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है। अगले साल होने वाले आम चुनावों तक औरतों में राजनीतिक जागरूकता फैलाने का काम लगातार होना चाहिए।

राजनीतिक समझ चार दिन में नहीं आती। उसके लिए अपने वोट का महत्व, अपने हक़ों की जानकारी होना ज़रूरी है। राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों को उनके काम की कसौटी पर कसना पड़ेगा। अपनी ज़रूरतों और मांगों की प्राथमिकता तय करनी होगी। ताकि चुनाव के समय अलग-अलग दलों का लेखा जोखा किया जा सके। अपनी मांगें उनके सामने रखी जा सकें। बाद में जवाब-तलबी की जा सके।

भविष्य में औरतें चुनावी राजनीति में एक बड़ी ताकत के रूप में उभर सकती हैं। ज़रूरत है काफ़ी मेहनत की, ताकि वे अपनी ताक़त का इस्तेमाल अपने फ़ायदे के लिए कर पाएं।

राजनीति में सक्रिय भागीदारी

अब एक और बड़े बदलाव का समय आ गया है। औरतें सिर्फ़ वोट देने और सहूलियतें मांगने वाली न रहें। वोटर की हैसियत से उनकी भूमिका ज़रूर महत्वपूर्ण है। परंतु अब समय है राजनीतिक अखाड़े में कूदने का। गांव से लेकर देश के स्तर तक राजनीति में भागीदारी करने का।

आज तक जो भी औरतें राजनीति में आई हैं वो किसी की बेटी, बहन या पत्नी के रूप में। लेकिन अपने काम से उन्होंने यह ज़रूर साबित कर दिया कि वे राजनीतिक दांव-पेंच में किसी से कम नहीं। अब ज़रूरत है कि वे अपनी इच्छा से, समझ-बूझ कर स्वतंत्र रूप से इसे अपना पेशा चुनें।

पंचायती राज कानून के 1993 के संशोधन के तहत औरतों के लिए 30 प्रतिशत सीटें आरक्षित हैं। यह अपने आप में बड़ा कदम है। इसका फायदा उठाते हुए औरतों को अपनी राजनीतिक भागीदारी की शुरुआत बड़े पैमाने पर कर देनी चाहिए।

यह सही है कि आरक्षण के बावजूद वर्ग, जाति जैसे कई मुद्दे सामने खड़े होंगे। कई मामलों में औरतें सिर्फ़ नाम के लिए चुनाव लड़ेंगी और जीतेंगी। असली खेल पीछे से उनके मर्द खेलेंगे। इन सभी खतरों के प्रति सावधान रहने की ज़रूरत है।

पंचायत में चुनी जाने वाली औरतों के पास अनुभव, जानकारी और आत्मविश्वास की कमी भी हो सकती है। इन सभी रुकावटों को पार करते हुए आगे बढ़ना है। □